Prof Randhir Kr Singh
Asso prof.
Dept of Sociology
Patna College. P.U

B.A. Part — I
Paper — I

M-9546991571

Topic ⟶ Define sociology.

Auguste Comte ने लोगों के पारस्परिक सम्बन्धों के निरीक्षणात्मक विज्ञान को स्थापित करने के लिए ही सर्वप्रथम समाजशास्त्र या sociology शब्द का प्रयोग किया था।

समाजशास्त्र का स्वाभाविक अर्थ मानवीय संगठन या समाज रचना का विज्ञान है। परन्तु समाज का विस्तृत अध्ययन इस शब्द विशेष की उत्पत्ति की अपेक्षा अति प्राचीन है। वास्तव में यह शब्द तो आधुनिक काल की देन ही है। समाजशास्त्र महान दार्शनिक और विचारक Plato की महान कृति रिपब्लिक का विषय था जो वास्तव में नगर समुदायों (City Community) का सभी पहलुओं से विश्लेषणात्मक अध्ययन ही था। जब तक state and community के मध्य भेदों के विषय पर अभी सोच विचार आरम्भ भी नहीं हुआ था तो समाजशास्त्र को प्रायः राजनीति सम्बन्धी अनेक लेखों में शामिल कर लिया गया था।
कॉम्टे ने इन भ्रमों को दूर करके मानव-सेवा का महान कार्य किया और समाज के वैज्ञानिक अध्ययन का एक विशेष तरीका पेश किया।

विभिन्न परिभाषायें → भिन्न-भिन्न लेखकों ने समाजशास्त्र की अलग-अलग परिभाषाएँ —

Ward के अनुसार — "sociology is the science of society or of social phenomena"

Ginsberg के अनुसार — "sociology is the study of human inter-actions and inter-relations, their conditions and consequences"

Hobhouse के अनुसार — "subject-matter of sociology is interaction of human minds."

Park and Burgess के अनुसार — "sociology is the science of collective behaviour."

Durkheim के अनुसार — "The aim of sociology is to treat social facts as things."

Reuter के अनुसार — "The purpose of sociology is to establish a body of valid principle: a fund of objective knowledge that will make possible the direction and control of social and human reality."

Tonnies के अनुसार — "sociology is on the whole the theory of human living together."

Von Wiese के अनुसार — "sociology is a special social science, concentrating on inter human behaviour."

Kimball young के अनुसार — "sociology deals with the behaviour of man in groups."

Gillin and Gillin के अनुसार — "sociology in the broadest sense may be said to be the study of inter-actions arising from the association of living beings."

अतः की सभी परिभाषाओं से एक तीन प्रकार की विचारधाराएं से परिलक्षित होती हैं।

प्रथम, समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है,
दूसरा, समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन है,
तृतीय, समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों की विभिन्न स्थितियों का अध्ययन है।

समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है अतः समाजशास्त्र मानव समाज का विज्ञान भी है। समाज में व्यक्ति का समस्त जीवन ही उसका कार्य क्षेत्र है। समाज में समाजशास्त्री का प्रधान कार्य मानव समाजों और सामाजिक संस्थाओं के उद्भव, विकास और लक्षण को ज्ञात करना है। इसलिए समाजशास्त्री मानव और उसके खानपान के समाज के विकास-क्रम, सामाजिक संस्थाओं का विकास और कामकाज, उनके रूपों, तरीकों, रचना, रीति रिवाज और आचार-व्यवहार जैसे जिनके जिनसे समाज बनते, विकसित होते और कायम रहते हैं और जगत में व्यक्ति द्वारा बनाए गये समूहों और समुदायों के भेदों को जानने और समझने की कोशिश करता है।

समाजशास्त्र का दूसरा काम सामाजिक जीवन में समूहों के अन्योन्याश्रित होने के स्वभावों की छानबीन करना है। इसलिए वह परिवार की रचना और समाज तथा धार्मिक संगठन, राज्य के भिन्न-भिन्न रूपों में तथा धन के बँटवारे, धर्म और पूँजीवाद आदि के परस्पर सम्बन्धों की जाँच करता है। यदि हम समाज की बनावट और निर्माण के बारे में जानना चाहते हैं, तो उपरोक्त बातों का ज्ञान होना और उन्हें ध्यान में रखना आवश्यक है।

तीसरे समाजशास्त्री की रुचि, समाज के भिन्न-भिन्न अंगों के पारस्परिक सम्बन्धों में होती है।

यह उन नियमों को जानने का प्रयत्न करता है जिनसे एक समाज अपने समाज की व्यवस्था और दशा की नकल करने की कोशिश करता है और समाज का संचालन करने वाली प्रक्रियाओं और परिवर्तनों नियमों का अध्ययन भी करता है।

यद्यपि समाज, संस्थायें, समुदाय बनती हैं, फलती-फूलती हैं और मिट जाती हैं, परन्तु फिर भी परिवर्तन के इस सतत प्रवाह में भी उनके कुछ स्थिर मिल ही जाते हैं। इसलिए समाजशास्त्री की परिवर्तन नियमों और सामाजिक जीवन के सिद्धान्त का अनुभवसिद्ध सामान्यीकरण स्थापित करना और भविष्य निर्धारण हो सके तो और वास्तविक वैज्ञानिक नियमों के अनुसार उनकी व्याख्या करना है।

समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है और समस्त इसका सामाजिक तत्वों के मूल में निहित सामान्य नियमों से सम्बन्धित है।

——— x ———